

नमस्तइत्यादयोष्टौ श्लोकाः स्तराजेव्याख्याताः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

भीष्मउवाच नमस्तेभगवन्कृष्णलोकानां प्रभवाप्यय ॥ त्वंहिकर्तृद्वेषो केशसंहर्ता चापराजितः ॥ २ ॥ विश्वकर्मन्मस्ते स्तु विश्वात्मन्विश्वसंभव ॥ अपवर्गस्थभूतानां पंचानां परतः स्थितः ॥ ३ ॥ नमस्ते त्रिषु लोकेषु नमस्ते परतस्त्रिषु ॥ योगीश्वर नमस्ते स्तु त्वंहि सर्वपरायणः ॥ ४ ॥ मत्संश्रितं यदात्थत्वं चः पुरुषसत्तम ॥ तेन पश्यामि ते दिव्यान्भावान् हि त्रिषु वर्त्मसु ॥ ५ ॥ तच्च पश्यामि गोविंदयत्ते रूपं सनातनं ॥ सप्तमार्गानि रुद्धास्ते वा योरिति ते जसः ॥ ६ ॥ दिवं ते शिरसा व्याप्तं पद्माय भक्ताय गतिमिष्टां जिगीषवे ॥ यच्छ्रेयः पुंडरीकाक्षतद्वायस्वसुरोत्तम ॥ ७ ॥ वासुदेव उवाच यतः खलु पराभक्तिर्मयि ते पुरुषर्षभ ॥ ततो मया वपुर्दिव्यं त्वयिराजन्प्रदर्शितं ॥ १० ॥ नन्द्य भक्ताय राजेंद्र भक्तायानृजवेन च ॥ दर्शयाम्यहं मालानं च आशांताय भारत ॥ ११ ॥ भवांस्तु मम भक्तश्च नित्यं चार्जवमास्थितः ॥ दमेतपसि सत्ये च दाने च निरतः शुचिः ॥ १२ ॥ अहं स्वं भीष्ममां द्रुपदं तपसा स्वेन पार्थिव ॥ तव ह्युपस्थिता लोका येभ्यो नावर्तते पुनः ॥ १३ ॥ पंचाशतं षट्चक्रुः प्रवीरशेषं दिनानां तव जीवितस्य ॥ ततः शुभैः कर्मफलैर्दयैस्त्वं समेष्यसे भीष्मविमुच्य देहं ॥ १४ ॥ एते हि देवा वसवो विमानान्यास्थाय सर्वे ज्वलिताग्नि कल्याः ॥ अंतर्हितास्त्वां प्रतिपालयंतिकाष्ठां प्रपद्यंत मुदकपतंगं ॥ १५ ॥ व्यावर्तमाने भगवत्युदीर्चां सूर्ये जगत्कालवशं प्रपन्ने ॥ गतां सिलोकान् पुरुषप्रवीरानावर्तते या नुपलभ्य विद्वान् ॥ १६ ॥ अमुं च लोकं त्वयि भीष्मया ते ज्ञानानि न क्ष्यंत्य खिलेन वीर ॥ अतस्त्वं सर्वं त्वयि सन्निर्कष्य समागता धर्मविवेचनाय ॥ १७ ॥ तज्ज्ञातिशोकोपहतश्रुताय सत्याभिसंधाय युधिष्ठिराय ॥ प्रब्रूहि धर्मार्थं समाधियुक्तं सत्यं चोत्स्यापनुदाशुशोकं ॥ १८ ॥ इति श्रीमहाभारते शांतिपर्वणि राजध ० कृष्णवाक्ये एकपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥ ॥ ५३ ॥

स्य शरत्पश्यनानंतरं अष्टौ दिनानि युद्धं ततो दुर्योधनाशौचं युयुत्सोः षोडश दिनानि तेन सह पुरं प्रविशतां पांडवानामपि तावन्ति दिनानि गता निपंच विशे सर्वेषां आद्धानं षड्विंशति पुरप्रवेशः सप्तविंशतिराज्याभिषेकः अष्टाविंशतिप्रकृतिसात्वन् आभ्युदयिकं दानं च ऊनत्रिशे भीष्मप्रत्यागमनं तद्दिनमारभ्य त्रिंशद्दिनानि शिष्टानीति ज्ञेयं ॥ १४ ॥ प्रतिपालयंति प्रतीक्षन्ते पतंगं सूर्यं ॥ १५ ॥ कालवशं जगत् प्रपन्ने प्राप्तेः शुभितिशेषः ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥